इस पर वह एकदम छिटक कर बोली, "तो कर लो किसी से शादी। तुम्हें अगर यह लगता है कि, शादी के बिना किसी औरत के साथ नहीं रहा जा सकता, उसके साथ सारा जीवन नहीं बिताया जा सकता, तो किसी से भी बेहिचक शादी कर लो, भर दो उसकी माँग में ढेर सारा सिंदूर। लेकिन मेरे साथ यह कभी नहीं हो पायेगा समझे। मैं भर पाई शादी से।

"क्या मान रखा उन-दोनों कमीनों ने सिंदूर का। सिंदूर को तो उन-दोनों ने अपने नीच कर्मों को पूरा करने के लिए हथियार की तरह इस्तेमाल किया। अरे! जब उस पवित्र चीज़ का, उस पवित्र रिश्ते का मान रख ही नहीं सकते, तो उसे अपवित्र करने का काम क्यों करते हो? दूसरी बार धोखा मिलने पर ही मैंने भगवान को साक्षी मान कर कसम खा ली थी कि, अब मैं किसी के कुकर्म का हिस्सा नहीं बनूँगी। सिन्दूर अपने तन को छूने नहीं दूँगी।

उसने बड़े तीखे शब्दों में कहा, "मैं बहुत साफ़-साफ़, बहुत अनुभव से कह रही हूँ कि, चाहे मैं होऊँ, या कोई और औरत, अगर मर्द उसके ढीले-ढाले अंगों, उसकी किसी भी बदसूरती को भी प्यार नहीं करता है, उसे ख़ाली ख़ूबसूरती ही ख़ूबसूरती चाहिए, तो फिर यह एकदम पक्का है कि, वो उस औरत से प्यार नहीं करता, उससे उसे कोई लगाव नहीं है, वो उसे धोखा दे रहा है। कोई और औरत न होने तक उससे ख़ाली अय्याशी कर रहा है बस। और सुनो बुरा नहीं मानना, तुम मेरे साथ अय्याशी ही कर रहे हो बस। और मैं भी तुम्हारे साथ अपनी कुचली हुई, दम निकलती ज़िंदगी में कुछ साँस भरना चाहती हूँ।

"सालों ने मुझे यही सब पढ़ा-पढ़ा कर ख़ूब खाया-पिया। मेरे पैसे पर ख़ूब ऐश की। कमीनों के लिए बाबू के कुर्ते, दुकान के गल्ले से भी पैसा मार देता था। सालों ने लंबी-लम्बी हाँकी कि, मेरा दोस्त वहाँ है, उससे मिल लेना। तेरा काम हो जाएगा। कोई बोलता मेरा रिश्तेदार, मेरा ये, मेरा वो। फर्जी फोन नम्बर, ऐड्रेस पकड़ा दिया। मैं साला पागल चला आया यहाँ ठोकरें खाने। ना घर का रहा ना घाट का। कुत्ता बन गया हूँ एकदम। बल्कि कुत्ते से भी बदतर। वो कम से कम शाम को घर तो लौट आता है। अब तुम भी उन्हीं कमीनों की तरह चढ़ाए जा रही हो झाड़ पर। लेकिन अब मैं नहीं चढ़ने वाला। अब साला चोरी-डकैती कर लूँगा। मार डालूँगा दो चार को। मगर ऐक्टिंग का नाम नहीं लूँगा।"